Class note **बी ए भूगोल पार्ट-2, पेपर-IV, इकाई-II**

उद्योगों के स्थानीयकरण (Location of Industries)

बोलेन्द्र कुमार अगम,
सहायक प्राध्यापक, भूगोल,
राजा सिंह महाविद्यालय, सिवान

किसी में किसी भी उद्योग में लागत को कम करने तथा लाभ को बढ़ाने के लिए एक अनुकूल स्थान की आवश्यकता होती है । उद्योगों की स्थापना को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों को हम 3 वर्गों में विभाजित कर सकते हैं:
भौगोलिक कारक
आर्थिक कारक
राजनीतिक कारक

भौगोलिक कारक (Geographical Factors)

इसमें कच्चा माल, शक्ति, श्रम, परिवहन तथा संचार, बाजार, जलवायु, जल आपूर्ति तथा सस्ती भूमि शामिल है ।

कच्चा माल (Access to Raw Material)

कोई भी उद्योग कच्चे माल के द्वारा ही तैयार माल उत्पन्न करता है और यह कच्चे माल दो प्रकार के होते हैं: वजन ह्रास और बिना वजन ह्रास । सामान्यता उद्योग उन्ही स्थानों पर लगाए जाते हैं जहां कच्चे माल प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हो, जैसे वन, कृषि क्षेत्र तथा समुद्र के निकट आदि ।
अधिकांश लौह इस्पात उद्योग वहां स्थापित किया जाता है जहां लौह अयस्क और कोयला दोनों ही उपलब्ध हों क्योंकि दोनों वजन ह्रास कच्चे माल है । इसी प्रकार निर्माण प्रक्रिया मे जिस कच्चे माल का भार घटता है उसे वजन ह्रासमान पदार्थ कहते हैं । कुछ वस्तुएं ऐसी भी होती है जिनके भार का ह्रास नहीं होता, जैसे 1 टन सूत बनाने के लिए 1 टन रुई की आवश्यकता होती है । वजन ह्रास उद्योग हैं लौह इस्पात उद्योग, गन्ने से चीनी बनाना, लकड़ी से लुग्दी, लुगदी से कागज, लेटेक्स से रबर आदि ।

शक्ति (Access to source of Energy)

उद्योगों के मशीनों को चलाने के लिए शक्ति की आवश्यकता होती है । ये शक्ति के सदन हैं: तापीय शक्ति, पेट्रोलियम ऊर्जा, विद्युत शक्ति, जल विद्युत शक्ति, प्राकृतिक गैस तथा परमाणु ऊर्जा आदि । अधिकांश उद्योग शक्ति के साधनों के निकट ही स्थापित होते हैं ।

श्रम (Access to Labour supply)

बिना श्रम के किसी भी उद्योग की कल्पना नहीं की जा सकती है, हालांकि पहले यह पूर्णतः मानव श्रम पर आधारित था जबकि अब कंप्यूटर और मशीनों के आ जाने से मानव श्रम की कम जरुरत पड़ती है परंतु अब कुशल मानव श्रम की आवश्यकता बढ़ गई है ।

परिवहन तथा संचार के साधन (Transport and communication)

कच्चे माल को कारखाना तक लाने और तैयार माल को कारखाना से बाजार भेजने या निर्यात के लिए परिवहन के विकसित साधनों की आवश्यकता होती है । इसलिए अधिकांश उद्योग रेलवे लाइन या बंदरगाह के निकट स्थापित होते हैं । परिवहन के साथ ही संचार के साधन जैसे डाक, तार, टेलीफोन और इन्टरनेट व ईमेल इत्यादि सूचनाओं का आदान-प्रदान तीव्र गति से करते हैं जो सहायक सिद्ध होते हैं ।

बाजार (Access to Market)

उद्योगों का मुख्य उद्देश्य ही है कि तैयार माल को जरूरतमंदों के पास पहुंचाया जाए नहीं तो उत्पादन का खपत नहीं हो पायेगा । इसके लिए एक के अच्छे बाजार की आवश्यकता होती है । इसलिए अधिकांश उद्योग बाजार के निकट या फिर बाजार से करखाने तक परिवहन के साधन अच्छा हो तो बाजार से थोड़ी दूर भी स्थापित हो सकता है ।

जलवायु (Climate)

जलवायु उद्योगों की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है । बहुत उद्योगों के लिए नम जलवायु की आवश्यकता होती है और बहुत सारे उद्योगों के लिए शुष्क जलवायु की आवश्यकता होती है ।

जल (Availability of Water)

उद्योग भारी मात्रा में जल का उपयोग करते हैं । इसलिए अधिकांश उद्योग जल स्रोतों के निकट स्थापित होते हैं । जैसे टाटा का लौह इस्पात उद्योग खरकई और स्वर्णरेखा नदियों से जल प्राप्त करता है ।

भूमि (Availability of Cheap Land)

उद्योगों को स्थापित करने के लिए विस्तृत भूमि की आवश्यकता होती है क्योंकि इसमें उत्पादन के लिए मशीन स्थापित करना, कच्चे माल रखने के लिए व्यवस्था करना, उत्पादित माल को सुरक्षित रखना तथा मजदूरों के रहने के लिए व्यवस्था करना आदि में बहुत ज्यादा भूमि की आवश्यकता होती है । इसलिए भूमि सस्ती होनी चाहिए ।

आर्थिक कारक (Economic Factor)

इसमें मुख्य रूप से पूंजी, बैंकिंग सुविधा तथा बीमा सुविधा आती है ।

पूंजी (Capital Flow)

किसी भी उद्योग को स्थापित करने के लिए पर्याप्त पूंजी की आवश्यकता होती है । कारखाना लगाने, कच्चे माल खरीदने, मजदूरों को वेतन देने से लेकर बाजार तक पहुंचाने के लिए एक बड़ी रकम की आवश्यकता होती है ।

बैंकिंग सुविधा (Banking Facility)

कारखाना के लगातार विकास के लिए निरंतर बहुत ज्यादा पूंजी की आवश्यकता पड़ती रहती हैं और इसीलिए बैंक उन्हें ऋण सुविधा के द्वारा यह रकम देते रहते हैं, जिससे उद्योगों का विकास होता है ।

बीमा सुविधा (Insurance Facility)

आजकल जीवन के हर क्षेत्र में बीमा एक जरूरत बन गई है । इसी प्रकार किसी उद्योग के लिए भी यह बहुत बड़ी जरूरत बन गई है । भारी मशीनों का बीमा, भूमि का बीमा, कारखाना का बीमा, श्रमिकों का बीमा से लेकर हर चीज का बीमा आवश्यक हो गया है ।

राजनैतिक कारक (Political Factors)

इसके अंतर्गत सरकार की नीतियां और राजनैतिक स्थिरता आती है ।

सरकार की नीतियां (Government Policies)

उद्योग की स्थापना में सरकार की नीतियां भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं ।
जैसे यदि किसी देश में सरकार कारखानों का राष्ट्रीयकरण कर रही हो तो वहां पर उद्योगपति अपने उद्योग नहीं लगाएंगे इसके विपरीत यदि कहीं टैक्स में छूट दिया जा रहा है तो उद्योगपति वहीं पर अपना कारखाना लगाने लगते हैं ।

राजनैतिक स्थिरता (Political Stability)

कोई भी कारखाना वहीं स्थापित हो सकता है जहां राजनीतिक स्थिरता हो । युद्ध और अशांति की स्थिति में कोई भी उद्योग विकास नहीं कर सकता ।

उद्योगों के बीच लिंक (Access to Agglomeration Economies)

कई उद्योगों अपने आस-पास के किसी बड़े या अन्य उद्योगों से लाभान्वित होते हैं । ये Agglomeration Economies के रूप में जाने जाते हैं । उद्योगों के बीच लिंक होने से बचत भी होती है ।

इस प्रकार स्पष्ट है कि किसी भी उद्योग के स्थापित होने में कई कारक काम करते है जहां पर उपरोक्त में से अधिकतम कारक मिल पाते हैं उद्योगों की स्थापना नहीं होती है ।

- सन्दर्भ : विश्व का भूगोल : महेश बरनवाल, एन सी ई आर टी